B.A. PART-1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य

प्रश्न :- रीतिकालीन कवि देव पर एक टिप्पणी लिखें ?

उत्तर :— जीवन-वृत्त

महाकवि देव रीतिकाल के प्रमुख आचार्य कवियों में से एक हैं। इनका जन्म संवत 1730 में हुआ। यह इटावा-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। देव को अपने जीवन में अच्छा आश्रयदाता नहीं मिला। इसलिए आजीविका के लिए इन्हें स्थान-स्थान जाना पड़ा। इन्होंने कई आश्रयदाताओं की शरण ग्रहण की। संवत 1824-25 के पास उनकी मृत्यु हो गई।

देव रचित 18 ग्रन्थ प्राप्त होते हैं—

1. भाव विलास 2. अष्टयाम 3. भवानी विलास
4. रस विलास 5. प्रेम-चन्द्रिका 6. राग-रत्नाकर
7. सुजान-विनोद 8. जगत दर्शन-पच्चीसी
9. आत्मदर्शन-पच्चीसी 10. तत्वदर्शन पच्चीसी
11. प्रेमदीपक 12. शब्द रसायन 13. सुखसागर-तरंग
14. प्रेम-तरंग 15. कुशल-विलास 16. जाति-विलास
17. देव-चरित्र 18. देवमाया-प्रपंच।

आचार्यत्व :-

देव आचार्य और कवि रूप में हमारे सामने आते हैं। आचार्य रूप में देव को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि रीतिकाल के कवियों में आचार्यत्व के अनुरूप कार्य करने में कोई भी समर्थ नहीं हुआ। फिर भी देव ने रसवाद की विस्तृत विवेचना की है और शृंगार को रसराज ठहराया है।

कवित्व :-

देव रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं, उनकी टक्कर का कवि बिहारी को ही माना जा सकता है। देव के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

1. कवि रूप में इनका प्रधान क्षेत्र शृंगार रस रहा है। इन्होंने शृंगार रस के संयोग और वियोग दोनों

रूपों का वर्णन किया है। वृद्धावस्था की रचनाओं में वैराग्य और भक्ति का स्वर प्रमुख है।

२. देव की रचनाओं में प्रकृति के आलम्बन रूप का अभाव है। उद्दीपन रूप का चित्रण उसमें अवश्य है, पर प्रमुख रूप से उन्होंने मानव-प्रकृति का चित्रण किया है।

३. देव दाम्पत्य-प्रेम के कवि थे। यद्यपि उन्होंने नायिका-भेद भी स्वीकार किया है, परन्तु दाम्पत्य-प्रेम को ही प्रधानता दी है। इस दाम्पत्य-प्रेम की पवित्रता इनके काव्य में दर्शनीय है।

४. देव ने वैराग्य और भक्ति की भी रचनाएँ है। देव का यह वैराग्य मूलतः अतिशय राग की प्रतिक्रिया है। आश्रयदाता के अभाव और आर्थिक ~~विफ~~ विफलता के कारण यह वैराग्य-भावना बढ़ गई थी और कवि को जीवन के सभी प्रकार के विषय भोगों से विरक्ति हो गई थी:—

"ऐसो जो हौं जानतो जैहै तू विषयन के संग,
ए रे मन मेरे हाथ पाँव तेरे तोरतो।"

५. देव ब्रजभाषा के प्रमुख आचार्यों में से हैं। उनके काव्य में ब्रजभाषा का पूर्ण समृद्ध रूप मिलता है। देव का शब्द-भण्डार व्यापक है। मिश्रबन्धुओं का स्पष्ट वचन है— "भाषा-साहित्य में देव और मतिराम इन दोनों कवियों की भाषा सर्वोत्कृष्ट है... विशेषकर देव की भाषा अद्वितीय है।"

६. देव ने प्रमुख-रूप से मुक्तक रचना ही की है और इसमें कवित्त और सवैया छन्दों का ही विशेष प्रयोग है।

देव निस्सन्देह, अपनी काव्यगत विशेषताओं के कारण रीतिकाल के महत्वपूर्ण कवि हैं। बिहारी उनके इस क्षेत्र में प्रमुख प्रतिद्वन्दी हैं। दोनों श्रृंगार के कवि हैं। लोक-प्रसिद्धि की दृष्टि से देव की

अपेक्षा बिहारी बहुत आगे हैं। बिहारी में चमत्कार है देव में रस है, प्रेमानुभूति की तीव्रता है उसकी भाषा में संगीत और झंकार है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न– रीतिकालीन कवि देव पर टिप्पणी लिखें?

पता!–
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग– हिन्दी (S.R.A.P.C., B.R.A.B.U. M)
मो०न०– 7909046087
दिनांक–03/02/2022